

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल | संपर्क: 8756390767

ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 35, मन्त्र 8: विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का यह पैंतीसवाँ सूक्त सूर्य (सविता देवता) को समर्पित है। इस मन्त्र में सूर्य की सर्वव्यापकता, प्रकाशक शक्ति, दिशाओं के नियमन और प्रकृति के वैज्ञानिक व आध्यात्मिक पक्षों का अद्भुत वर्णन मिलता है।

संहिता पाठः

अष्टौ व्यंख्यत्कुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सुप्त सिन्धून् ।
हिरण्याक्षः सविता देव आगाधधृद्रत्नां दाशुषे वार्याणि ॥८॥

संयुक्त शब्दार्थ

पद	सायण का अर्थ	दयानन्द का अर्थ
अष्टौ कुभः	आठ दिशाएँ	चार दिशाएँ और चार उपदिशाएँ
व्यंख्यत्	प्रकाशित किया	विशेष रूप से प्रकाशित करता है
त्री धन्व	पृथ्वी आदि तीन लोक	भूम्यन्तरिक्षप्रकाशस्थानि त्रीणि
हिरण्याक्षः	स्वर्णमय नेत्रों वाले	ज्योतिःस्वरूप
दाशुषे	हविर्दत्त यजमान	सर्वोपकारकाय यजमानाय

आचार्यों का अनुवाद

आचार्य सायणः

सविता देवता ने पृथ्वी की आठ दिशाओं को प्रकाशित किया है। वे रमणीय तथा स्वर्णमय नेत्रों वाले सविता देव हविष्य अर्पित करने वाले यजमान के लिए वरणीय रत्नों को धारण करते हुए पधारें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती:

वह सविता देव पृथिवी की आठों दिशाओं और उपदिशाओं को विशेष रूप से प्रकाशित करता है। जो तेजोमय, व्यापक ज्योतिःस्वरूप नेत्रों वाले सविता देव हैं, वे सबका उपकार करने वाले यजमान के लिए ग्रहण करने योग्य श्रेष्ठ रत्नों को धारण करते हुए उपस्थित होते हैं।

व्याकरण-प्रक्रिया

व्यख्यत्: ख्या धातु से लुङ् लकार। **धन्वः** गतिकार्थक धवि/रवि धातु से कनिन् प्रत्यय। **हिरण्याक्षः** बहुव्रीहि समास, षच् प्रत्यय। **दाशुषे:** क्वसु प्रत्ययान्त निपातित शब्द। **वार्याणि:** ण्यत् प्रत्यय।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

- दिशाओं का नियमन:** सूर्य की किरणें पृथ्वी के घूर्णन अक्ष के कारण विभिन्न कोणों से प्रकाश फैलाती हैं।
- अंतरिक्षीय संरचना:** सूर्य पृथ्वी, वायुमंडल और बाह्य अंतरिक्ष की त्रिस्तरीय संरचना को संचालित करता है।
- सप्त सिन्धु:** यह ऊर्जा प्रवाह के सात प्रमुख स्तरों या जल-चक्र को इंगित करता है।
- हिरण्याक्ष:** यह फोटॉन ऊर्जा (तेजोमय प्रकाश) का वैज्ञानिक प्रतीक है।